प्रतीक 06/05/20

किसी भी शब्द के तीन पक्ष होते हैं–(1) वह ध्वनियों का समूह है। जैसे 'कमल' कई स्वरों और व्यंजनों का समूह है। (2) ध्वनियों के इस समूह का साक्षात अर्थ यानी एक पुष्प विशेष और (3) विविध व्यंजनाएँ या अर्थ-छवियाँ, जो कमल से जुड़ी हुई हैं। जैसे–कोमलता, निष्कामता, पावनता, सौंदर्य, प्रफुल्लता आदि। कविता की भाषा में यद्यपि शब्द के इन तीनों पक्षों का महत्त्व है किंतु ध्वनियों का समूह, छंद, लय, गति, यति आदि का आधार है तथा अर्थ-छवियाँ काव्य की मूल संवेदना एवं अनुभव को व्यक्त करने में उपकरण बनती हैं। इसलिए जहाँ 'कमल' का प्रयोग प्रतीक के रूप में हुआ है वहाँ संदर्भ विशेष के आधार पर प्रतीक के वे विविध अर्थ लिए जाते हैं जो उस काव्य के अनुभव को सघन रूप में सहायक होते हैं। मुक्तिबोध की 'अंधेरे में' कविता की ये पंक्तियाँ देखिए–

पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार
तक कहीं देखने मिलेंगी बाहें
जिसमें कि प्रतिपल काँपता रहता
अरुण कमल एक....

इन पंक्तियों में 'दुर्गम पहाड़' बाधाओं के, अनथक संघर्ष के तथा निरंतर साधना के प्रतीक हैं और 'अरुण कमल' उस आदर्श का प्रतीक है जो सौंदर्य और जीवन का परम लक्ष्य है। स्पष्ट है कि इन प्रतीकों को प्रयोग कवि की काव्य-साधना का परिणाम है जो काव्य के अनुभव की गंभीरता से अपने आप व्यक्त होने लगते हैं। इस प्रकार की प्रतीक-योजना का मूल तत्त्व कवि की कल्पना-शक्ति है, जो रचनात्मक क्षण के विशिष्ट अनुभव के अनुरूप प्रतीकों का सृजन करती है।

उन्नीसवीं शती के अंतिम चरण में तीन फ्रांसीसी कवियों–मालामें, वर्लेन और रिंबों ने प्रतीकवाद स्कूल की स्थापना की जिसको अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव पड़ा। किंतु साहित्य में प्रतीकों के प्रयोग की परंपरा काफी पुरानी है। ऋग्वेद में इंद्र, मित्र, मरुत, सविता, रुद्र आदि देवता क्रमशः शक्ति, चेतना, बल प्रेरणा तथा

Close **Participants (8)**

Search

P Dr.Harkesh Rathi (me, host)

H Heena 1192

J1 jyoti 1218

M Mausam Kumari

M Meera1357

N Nisha1388

SY SUNAINA YADAV 3

J1 Jyoti 1372

Invite | Mute All | Unmute All

39% 3:05 p.m.
H
Heena 1192
Meera1357
M
Mausam Kumari

H

Heena 1192

Meera1357

M

Mausam Kumari

Jyoti 1372

41% 3:01 p.m.
H
Heena 1192
Meera1357

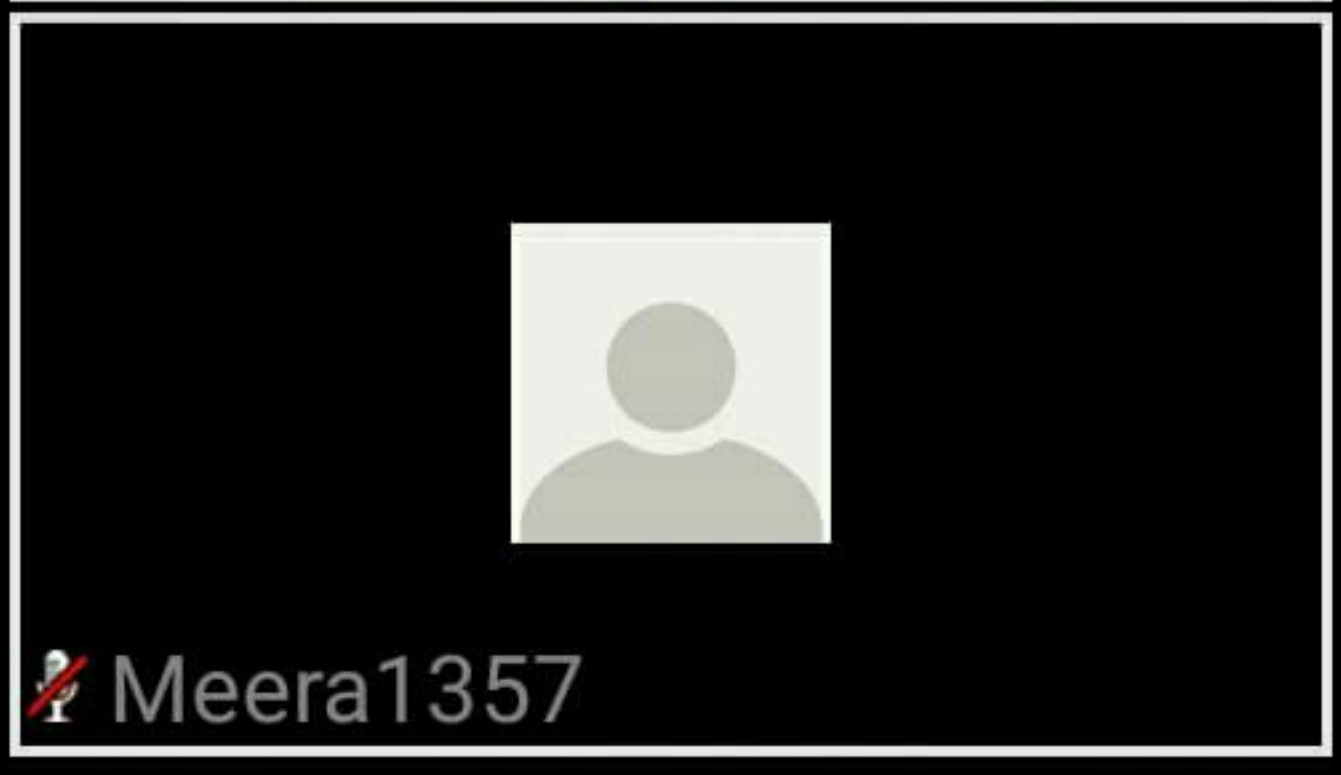

(13) **प्रतीक का महत्त्व**–प्रतीक अपनी गोचरता एवं अर्थ-छवियों की अनेक रूपता के कारण काव्य-भाषा को धार देते हैं और उसे अधिक प्रखर बनाते हैं। प्रतीकों का प्रयोग न करके यदि सीधे सपाटबयानी के रूप में अभिधा के स्तर पर कथ्य को कहें तो उसमें अभिव्यक्ति सामान्य भाषा की हो जाएगी, अत: उसमें सर्जनात्मक अभिव्यक्ति की कलात्मकता नहीं आएगी, न वह प्रभावी ही हो सकेगा।

प्रतीकों के कारण ही काव्य में बिंबात्मकता आती है, जो अर्थ-संप्रेषण में बहुत सहायक है।

यह दीप अकेला स्नेह भरा। –अज्ञेय

यहाँ 'दीप' व्यक्ति का प्रतीक है। व्यक्ति को 'दीप' कहने में स्नेहयुक्त, चमकीला, आकर्षक, अंधेरे को दूर करने वाला, पथ-प्रदर्शक, स्नेह (तेल) न होने पर बुझ जाने वाला आदि अनेक अर्थ-छवियाँ सहज ही उभर आई हैं। स्पष्ट है कि कवि जब अपने अनुभव को सामान्य शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करने में असमर्थ हो जाता है तभी वह भावना को मूर्त रूप देने के लिए प्रतीकों का प्रयोग करता है। इस प्रकार निश्चय ही प्रतीकात्मकता शैली का गुण है।

सिद्ध साहित्य आदि में भी काफी प्रतीक प्रयुक्त हुए हैं। हिंदी में नाथ साहित्य में 'मृग' मन का प्रतीक है, तो 'वेश्या' माया का, 'पुरुष' ब्रह्म का तथा 'कौवा' जीव का। ऐसे ही संतों, सूफियों, छायावादी कवियों तथा नई कविता में भी तरह-तरह के प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

प्रतीकों का वर्गीकरण–प्रतीकों का वर्गीकरण कई आधारों पर कई प्रकार से हुआ है। साधारणतः प्रतीकों के दो रूप माने जाते हैं–

(1) अगोचर तथा (2) गोचर।

(1) अगोचर प्रतीक–ब्रह्मा, विष्णु, शिव को हमने देखा नहीं किंतु उनके नाम से ही मन में स्वरूप और विशेषताएँ आ जाती हैं। कल्पवृक्ष के अस्तित्व को कोई प्रमाणित नहीं कर सकता पर हमारी धार्मिक संस्कृति से संबंध रखने के कारण हम भाव-जगत में उसकी स्थिति मानते हैं। कल्पवृक्ष के नाममात्र से हमारी आँखों के सामने एक ऐसी वस्तु आ जाती है जिससे जब जो चीज माँगी जाए, देने को सदा तैयार है।

(2) गोचर प्रतीक–गोचर प्रतीक वे हैं जो किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि करते हैं। चंद्र, कुमुदिनी, आकाश, समुद्र, हंस, पतंग आदि हमारे मन में विशिष्ट भावनाएँ जाग्रत करते हैं। चंद्र से स्निग्धता, आह्वाद का, कुमुदनी से शुभहास का, आकाश से उच्चता, अन्नता का, समुद्र से अगाधता, गंभीरता प्रचुरता का, हंस से विवेक का और पतंगें से लगन तथा एकनिष्ठता के भाव मिलते हैं।

रामचंद्र शुक्ल दो प्रकार के प्रतीक मानते हैं–(1) भावात्मक प्रतीक (2) विचारात्मक प्रतीक। उदाहरण के लिए कबीर के काव्य में 'दुलालिनी' शब्द आत्मओं का प्रतीक है तथा 'भरतार' शब्द 'ब्रह्मा' का प्रतीक है। आत्मओं और ब्रह्म में भावात्मक संबंध होने से ये भावनात्मक प्रतीक हैं तो उन्हीं के काव्य में 'तरवर एक पेड़ बिन ठाढ़ा' में तरवर (शरीर) विचारात्मक प्रतीक है।

पाश्चात्य विद्वान अरबन ने दो प्रकार के प्रतीक माने हैं– (1) बाहरी प्रतीक, जिनका अर्थ से कोई संबंध नहीं होता, वैसे ही किसी को प्रतीक मान लेते हैं। जैसे नाथों ने भील को ब्रह्म का प्रतीक माना है। (2) आंतरिक प्रतीक–जो किसी प्रकार के सादृश्य के कारण अर्थ से जुड़े होते हैं, जैसे 'माया' के लिए–कामिनी, 'आत्मा' के लिए हंस या 'मन' के लिए तुरंग, पारद, मृग भंवरा आदि।

कुछ और वर्गीकरण भी हो सकते हैं, जैसे–(1) परंपरागत (अज्ञान के लिए रात) तथा (2) नवागत (जैसे अज्ञेय द्वारा अस्तित्व के लिए 'नदी के द्वीप') या सार्वभौम (जो प्रायः सभी संस्कृतियों में माने गए हैं।) जैसे–अज्ञान के लिए रात या ज्ञान के लिए दिन तथा एक देशीय या एकक्षेत्रीय (जैसे भारत जैसे गर्म देश में 'धूप' सुख का प्रतीक है। वैसे एक देश या एक क्षेत्र के प्रतीक भी सर्वदा एक से नहीं होते।) उदाहरण के लिए रीतिकाल में जो कविता कामिनी के समान कोमल और मधुर मानी जाती थी, वह नए कवि के लिए अंगारा है। इसलिए वह कविता को कामिनी ही नहीं कहता, वरन् उसे अंगारे की तरह महसूस करता है–

जबकि मैं महसूस कर रहा हूँ–
कविता को
हथेली पर अंगारे की तरह —नरेंद्र मोहन, दृश्यांतर पृ.166

इतना ही नहीं एक की काल के प्रतीकों में भी अंतर देखा जाता है। उदाहरण के लिए मध्यकाल में संत काव्यधारा और सूफी काव्यधारा के प्रतीकों में भी अंतर है। कबीर के काव्य में स्त्री आत्मा का प्रतीक है तो पति ब्रह्म का–

दुलहिनी गावहु मांगलाचार
हम घरि आये हो राजा राम भरतार।

इसके विपरीत सूफी काव्य में 'स्त्री' ब्रह्म का प्रतीक है तो पुरुष आत्मा का, जो स्त्री को पाने के लिए प्रयत्नरत रहता है।

बहुत सारे प्रतीक व्यक्तिगत भी होते हैं। प्रयोगवादी कवियों में व्यक्तिगत प्रतीक बहुत ज्यादा हैं इसलिए कभी-कभी लोगों ने अज्ञेय या शमशेर जैसे प्रयोगवादी कवियों को प्रतीकवादी कहा है। अज्ञेय के कुछ व्यक्तिवादी प्रतीक देखिए–

(1) मछली–अस्तित्व
(2) हारिल–अस्तित्व, इस पक्षी के बारे में प्रसिद्ध है कि उड़ते समय भी यह अपने चंगुल में लकड़ी लिए रहता है।
(3) नदी के द्वीप–अस्ति का संकट
(4) सागर–समाज, सामाजिक वर्जना
(5) धूप–खुलपान, आलिंगन से प्राप्त गरमाहट आदि।